4

नये मनुष्य की सृष्टि

परमेश्वर द्वारा की गई रचनाओं में मनुष्य सबसे अलग है। उसमें खेत के पशुओं की तरह शारीरिक देह है और स्वर्ग के स्वर्गदूतों की तरह, उसमें अनन्त आत्मा है। मनुष्य की आत्मा अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ प्रेम रखने तथा संगति के लिए बनाई गई थी, परन्तु क्षमा न होने वाला पाप मनुष्य की आत्मा और परमेश्वर के पवित्र आत्मा में एक आत्मिक बाधा खड़ी कर देता है। पौलुस ने इस स्थिति को ''... अपराधों और पापों के कारण मरे हुए'' के रूप में बताया है। पाप में मरे होने का अर्थ ''उस आत्मा के अनुसार'' चलना है ''जो अब भी आज्ञा न मानने वालों के लिए कार्य करता है'' (इफिसियों 2:1, 2; रोमियों 6:17)।

मनुष्य की आत्मा को परमेश्वर के आत्मा से अलग करने वाली पाप की अदृश्य रुकावट को केवल यीशु के लहू के द्वारा ही हटाया जा सकता है। हमारे पवित्र परमेश्वर की नजर में पाप इतना गम्भीर अपराध है कि ''बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती'' (इब्रानियों 9:22)। उद्धार के लिए मनुष्य की एकमात्र आशा ''यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह'' के द्वारा ही है (1 कुरिन्थियों 2:2)। यीशु ही ''परमेश्वर का मेमना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29)।

मन की तैयारी

यीशु के लहू के द्वारा शुद्ध होने के लिए प्राण तभी तैयार होता है, जब पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन के द्वारा पापी के मन पर कार्य करने लगता है। ''दीनता से'' (याकूब 1:21) परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने पर, परिणाम बड़े ज़बर्दस्त होते हैं: पापी व्यक्ति व्यवस्था, हृदय और आत्मा के बड़े परिवर्तन ''में से होकर गुज़रता है!'' सच्चाई के अपने संदेश के द्वारा, पवित्र आत्मा, पापी को एक नये विश्वास के प्रति सजग करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (रोमियों 10:17)। परमेश्वर भक्ति के शोक और सच्चे दिल से मन फिराकर (2 कुरिन्थियों 7:10) वह धार्मिकता के प्रति और न्याय के प्रति निरुत्तर हो जाता है (यूहन्ना 16:8)। परमेश्वर के वचन के द्वारा पवित्र आत्मा के इस सामर्थी कार्य को करने से उसे मन फिराने और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने का निर्णय करने में सहायता मिलती है (प्रेरितों 2:38)। पवित्र आत्मा आश्चर्यकर्म के द्वारा किसी पापी के हृदय में नहीं आएगा कि वह ''मन को अच्छा अहसास होने वाली स्थिति'' के द्वारा सीधे कार्य करे। वह पापी की अपनी इच्छा के विरुद्ध उसे बचाने के लिए ''मोहक बल'' नहीं बनाएगा। परमेश्वर ऐसे बलपूर्वक और रहस्यमयी ढंगों से पापी हृदय पर काम नहीं करता; ऐसे

अनुभव पाने की प्रतीक्षा करने वाले प्राणों के साथ शैतान ऐसे ही कार्य करेगा।

क्षमा न किए गए पापी का अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ एकमात्र सम्पर्क सच्चाई के परमेश्वर के वचन की शिक्षा के द्वारा ही होता है। मसीहियत सिखाने का धर्म है, और प्राणों के लिए यीशु से सीखने को तैयार होना आवश्यक है (मत्ती 11:29)। जो लोग फुर्ती से सच्चाई के उसके वचन को ग्रहण कर लेते हैं, वे अपने जीवनों में परमेश्वर के कार्य करना आरम्भ करने के लिए पवित्र आत्मा को अनुमति देते हैं, जिस कारण विश्वास का भोर का तारा उनके हृदय में चमकेगा (2 पतरस 1:19)।

मन को सिखाया जाना

परमेश्वर का वचन ''आत्मा की तलवार'' (इफिसियों 6:17) है, जैसा कि नीचे रेखाचित्र द्वारा ज़ोर देकर समझाया गया है। जिस प्रकार तलवार से लड़ने वाले के कार्य को उसकी तलवार के प्रभावों से अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही सच्चाई के उसके वचन से पवित्र आत्मा को अलग नहीं किया जा सकता।

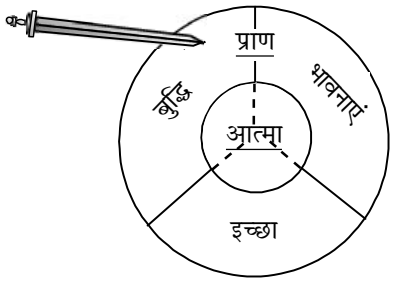

परमेश्वर का वचन: ''आत्मा की तलवार''
(इफिसियों 6:17; 2 तीमुथियुस 3:16, 17; प्रेरितों 20:20; याकूब 1:21)

पवित्र आत्मा जो भी करता है, वह सच्चाई के अपने प्रकट वचन के द्वारा ही करता है। इस पृष्ठ के नीचे दिए गए चार्ट में दी गई आयतों से इसे अच्छी तरह समझाया जा सकता है।

बाइबल के गम्भीर छात्र के लिए यह स्पष्ट होना आवश्यक है कि पवित्र आत्मा सच्चाई के अपने वचन के साथ मिलकर ही कार्य करता है। जैसे एक तलवार और तलवारबाज़ युद्ध के समय करते हैं, वैसे ही पवित्र आत्मा और सच्चाई का वचन आत्मिक युद्ध में कार्य करता है (इफिसियों 6:17)। इसका अर्थ यह नहीं है कि पवित्र आत्मा और परमेश्वर का वचन एक ही हैं, बल्कि इसका अर्थ यह है कि आत्मा हमारे जीवनों में तब तक काम नहीं करेगा, जब तक हम परमेश्वर के संदेश पर विश्वास करके उसे मानने के लिए अपने मनों को उसके आगे नहीं झुकाते। इसका अर्थ यह भी है कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु पर विश्वास करना तब तक

नहीं हो सकता, जब तक हम परमेश्वर के वचन की सच्चाई को नहीं सुनते।

आज बहुत से लोगों का यह मानना है कि परमेश्वर उनकी अपनी भावनाओं और आवेगों के द्वारा उनकी अगुआई करता है। वे दावा करते हैं कि वे उद्धार पाए हुए लोग हैं, क्योंकि वे ''अपने अन्दर इसे महसूस कर सकते हैं।'' ऐसे व्यवहार में बड़ा खतरा है, क्योंकि शैतान जो एक दुष्ट आत्मा है, भी मनुष्य की आत्मा तक पहुंच सकता है। हमें चेतावनी दी गई है कि अपने झूठों से उसने ''उन अविश्वासियों के लिए, जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके'' (2 कुरिन्थियों 4:4)। परमेश्वर उस प्रभाव को, जो शैतान और उसके दुष्ट साथियों का हमारे मनों पर पड़ सकता है, जानता है। वह चेतावनी देता है, ''मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला है'' (यिर्मयाह 17:9)। हमारे लिए भावनाओं पर और अपने मनों के अंदरूनी प्रभावों पर निर्भर रहना आत्मिक आत्महत्या करना है!

अपने मनों के विचारों को जानने का कि वे सही हैं, एकमात्र ढंग उन्हें परमेश्वर के वचन के साथ मिलाकर परखना है। ''मन की भावनाओं और विचारों को जांचने'' वाला (इब्रानियों 4:12) परमेश्वर का वचन ही एकमात्र मापदण्ड है, जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं। मनुष्य की शिक्षाओं, भावनाओं तथा अपने मनों के प्रभावों की परख करने के लिए आइए हम इसी का इस्तेमाल करें (1 यूहन्ना 4:1)। हमारा आत्मिक स्वास्थ्य इतना महत्वपूर्ण है कि हमें परमेश्वर के वचन के गम्भीर और समर्पित छात्र होना आवश्यक है!

विचारों का अलग होना

पवित्र आत्मा के विषय पर गहराई में जाने से पहले, हमें इस प्रश्न को देखना आवश्यक है कि पवित्र आत्मा हम में *कैसे* वास करता है। इस प्रश्न के उत्तर में तीन प्रसिद्ध विचार दिए जाते हैं:

विचार #1 है कि पवित्र आत्मा सीधे कार्य करता है, यानी उसका काम परमेश्वर के वचन से अलग है। इस विचार का खतरा स्पष्ट है। इस विचार को मानने वाले पवित्र आत्मा से अगुआई और निर्देश के मुख्य आधार के रूप में अधिकतर व्यक्तिगत भावनाओं, आवेगों, प्रभावों और अनुभवों पर निर्भर रहते हैं। हमने पहले ही इस भ्रमित करने वाले भरोसे के खतरे की बात की है।

विचार # 2 है कि पवित्र आत्मा मसीही लोगों में केवल परमेश्वर के वचन के द्वारा ही वास करता है। यह विचार इस मान्यता पर आधारित है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के प्रतिनिधि के रूप में परमेश्वर का वचन हम में वास करता है। इस विचार को मानने वालों का विश्वास है कि पवित्र आत्मा आप नहीं, बल्कि परमेश्वर का वचन उन में वास करता है। किसी समय मैं भी इसी विचार को मानता था। इस विचार के समर्थक अक्सर यूहन्ना 6:63 में यीशु के शब्दों को दोहराते हैं: ''जो बातें मैं ने तुम से कही हैं, वे आत्मा हैं और जीवन भी हैं।'' क्या यीशु के कहने का यह अर्थ था कि उसकी बातें पवित्र आत्मा हैं या वह यह घोषणा कर रहा था कि उसकी बातें जीवन के आत्मिक वचन हैं? क्या यह हो सकता है कि यीशु केवल

यह सिखा रहा था कि सच्चाई के उसके वचन के बिना कोई आत्मिक जीवन नहीं है?

विचार # 3 है कि परमेश्वर के वचन के संयोग तथा साथ पवित्र आत्मा मसीही व्यक्ति में व्यक्तिगत तौर पर रहता है। यूहन्ना 14:23 से यीशु के शब्द इस विचार को स्पष्ट करते हैं: ''यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे।'' यीशु ने प्रतिज्ञा की कि पवित्र आत्मा केवल उन्हीं में वास करेगा, जो उससे प्रेम करते और उसकी बातों को मानते हैं। यदि आत्मा मसीही लोगों के जीवनों में सक्रिय है, तो हम आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर का वचन सिखाया गया है और माना गया है तथा इसे एकमात्र अधिकार के रूप में सम्मान दिया जाता है। पवित्र शास्त्र को गहराई से जांचने से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे।

यूहन्ना 6:63 के पहले भाग में यीशु ने इस सच्चाई की घोषणा की: ''आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: ...''। अन्य शब्दों में, जहां व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर का आत्मा है, वहां आत्मिक, अनन्त जीवन भी है। जहां वह नहीं है, वहां आत्मिक मृत्यु है। वह परमेश्वर के वचन को याद कर सकता है; परन्तु यदि उसके मन में विश्वास और आज्ञाकारिता नहीं है, तो पवित्र आत्मा नहीं होगा और जीवन भी नहीं होगा।

ईश्वरीय प्रतिज्ञाएं

पुराने नियम के भविष्यवक्ता यहेजकेल ने हमारे प्रभु की नई वाचा के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की थी: ''मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा; और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूंगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे'' (यहेजकेल 36:26, 27)। इस भविष्यवाणी में दोहरी प्रतिज्ञा है: (1) परमेश्वर ने नई वाचा के अपने लोगों को पहले नया मन देना था। (2) परमेश्वर ने अपनी संतान में अपना ही आत्मा डालना था। एक पापी के परमेश्वर के आत्मा को स्वीकार करने से पहले आवश्यक है कि वह हृदय और आत्मा को बदले। यह परिवर्तन पापी को पाप के प्रति निरुत्तर कर उसे मन फिराव में अगुआई करके परमेश्वर के वचन के द्वारा लाया जाता है। अपनी सेवकाई के समय यीशु ने अपने चेलों को बताया था, ''तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो'' (यूहन्ना 15:3)। परमेश्वर के जीवित वचन के द्वारा पवित्र आत्मा ने यीशु के चेलों के हृदयों और मनों को बदलकर नया बना दिया था। उनके पापी मन पश्चात्तापी व्यवहार में पिघल गए थे, जिस कारण वे उसकी इच्छा मानने वाले और उसे समर्पण करने वाले चेले बन गए थे। यहेजकेल ने एक दूसरी आशीष की प्रतिज्ञा की, जो स्वयं पवित्र आत्मा का दान है। यह प्रतिज्ञा केवल मसीह के महिमा पाने के बाद ही दी जा सकती थी (यूहन्ना 7:39)।

यहेजकेल 36:26, 27 से बड़ी कोई ईश्वरीय प्रतिज्ञा नहीं है। परमेश्वर का जीवित और सामर्थी वचन पश्चात्तापी और समर्पित व्यवहार उत्पन्न करके चेले के हृदय और मन को पवित्र आत्मा को ग्रहण करने के लिए तैयार करता है। पश्चात्ताप और मसीह में

बपतिस्मा (गलातियों 3:27) पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा के दान का कारण बनता है (प्रेरितों 2:38)। नई सृष्टि को जल और आत्मा का नया जन्म मिलता है, जिसके बारे में यूहन्ना 3:5 में यीशु ने कहा था, ''मैं तुझ से सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।''

पिन्तेकुस्त के दिन ''जिन्होंने उसका [पतरस का] वचन ग्रहण किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया'' (प्रेरितों 2:41)। बदलने वाले इन लोगों ने पहले वचन को ग्रहण किया, जिससे यीशु में विश्वास और पाप के प्रति पश्चात्तापी व्यवहार उत्पन्न हुआ। फिर उन्हें बपतिस्मा दिया गया। यदि पवित्र आत्मा केवल परमेश्वर के वचन के द्वारा ही वास करता है, तो हम यह निष्कर्ष निकालने को विवश हैं कि पिन्तेकुस्त पर लोगों के मन में वह उनके वचन को ग्रहण करने के समय से, यानी बपतिस्मा लेने से पहले रहने लगा था। यह नहीं हो सकता, क्योंकि ''पवित्र आत्मा का दान'' देने की प्रतिज्ञा केवल उन्हीं को है, जो मन फिराकर पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते हैं। पतरस ने इस बात की पुष्टि की कि परमेश्वर पवित्र आत्मा उन्हें देता है, ''जो उसकी आज्ञा मानते हैं'' (प्रेरितों 5:32)। हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि ''वचन को ग्रहण करना'' महत्वपूर्ण है, पर यह ''आत्मा को ग्रहण करने'' की तरह नहीं है। आत्मा यहेजकेल द्वारा प्रतिज्ञा की गई परमेश्वर की दूसरी आशीष है।

ईश्वरीय चरम

यदि हम वचन को नज़रअन्दाज़ कर आत्मा पाने का दावा करें, तो हम वह हद पार कर देते हैं, जो वचन के अधिकार को नकारती है और जिसका परिणाम किसी की अपनी ही भावनाओं तथा आवेगों पर केन्द्रित धर्म में होता है। दूसरी ओर, यदि हम अपने पास केवल वचन होने का दावा करें आत्मा का नहीं, तो हम कई आयतों को उलझा देते हैं, जिनसे यह शिक्षा मिलती है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर की संतान में वास करता है।

भाइयों में एकता हो सकती है, चाहे हमें समझ न आए कि आत्मा हम में कैसे वास करता है। हमें इस बात पर सहमत होना ही पड़ेगा कि पवित्र आत्मा उन लोगों के जीवनों में, जिन्हें उद्धार मिल गया है, सामर्थी ढंग से कार्य करता है! इस मूल विश्वास के साथ परमेश्वर के वचन का अध्ययन जारी रखते हुए, इस भरोसे से कि यह हमें इस महत्वपूर्ण विषय पर शिक्षा के ठोस निष्कर्षों पर पहुंचाएगा, आइए हम ''मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न'' करें (इफिसियों 4:3)।

प्राण का उद्धार

एक विनम्र मन में ग्रहण की गई, परमेश्वर के वचन की शिक्षाएं पापी के भीतर आत्मिक जागृति उत्पन्न करती हैं। परमेश्वर के वचन के लिए अपना मन खोलकर पापी यह विश्वास करने के लिए आता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। उसे अपने जीवन के पाप से निरुत्तर किया जाता है और अपने पापों को धो डालने के लिए वह केवल यीशु के लहू में भरोसा करके, मन फिराने और बपतिस्मा लेने का निर्णय लेता है। यहां पर, यद्यपि पापी का यीशु में विश्वास और

वह अपने पिछले पापों से पश्चात्ताप कर रहा है, पाप की बाधा जो उसे परमेश्वर से अलग करती है, गिराई जानी बाकी है। उस आत्मिक बाधा को तभी गिराया जा सकता है, यदि वह अपने पापों की क्षमा के लिए पानी में बपतिस्मा लेता है। पवित्र आत्मा पापों की क्षमा को मूल में पापी के बपतिस्मे के साथ बड़ी स्पष्टता से जोड़ता है। यीशु ने अपना लहू ''पापों की क्षमा के लिए'' (मत्ती 26:28) बहाया। बपतिस्मा भी ''पापों की क्षमा के लिए'' (प्रेरितों 2:38) है। यह कैसे हो सकता है? पौलुस ने हमारे लिए इस प्रश्न का उत्तर दिया है।

रोमियों 1:16 में उसने लिखा है, ''... सुसमाचार ... उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।'' 1 कुरिन्थियों 15:1-4 में उसने सुसमाचार का अर्थ यीशु की मृत्यु, गाड़े जाना और जी उठना बताया है। उसने आगे सिखाया कि एक दिन परमेश्वर का क्रोध उन पर गिरेगा ''जो ... हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते ...'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:8)। इससे एक जटिल प्रश्न खड़ा हो जाता है। यदि सुसमाचार यीशु की मृत्यु, गाड़े जाना और जी उठना है तो कोई ऐसे संदेश की आज्ञा कैसे मान सकता है? रोमियों 6 में पानी के बपतिस्मे पर चर्चा करते हुए पौलुस ने इस प्रश्न का उत्तर दिया है। आयत 3 में उसने पूछा, ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का (में) बपतिस्मा लिया तो उसकी मृत्यु का (में) बपतिस्मा लिया?'' पौलुस ने घोषणा की कि पानी का बपतिस्मा ''मसीह यीशु में'' है। पाप से उद्धार सहित सभी आत्मिक आशिषें (2 तीमुथियुस 3:15), मसीह यीशु में पाई जाती हैं (इफिसियों 1:3)। पानी का बपतिस्मा ही वह एकमात्र माध्यम है, जिसमें से पापी ''मसीह में'' आ सकता है (गलातियों 3:27) और उसमें आत्मिक आशिषों का आनन्द ले सकता है।

नये नियम के अनुसार बपतिस्मा डुबकी से ही होना चाहिए। पौलुस ने घोषणा की कि ''उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके [यीशु के] साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें'' (रोमियों 6:4)। ''बपतिस्मा पाने से ... *गाड़े गए*'' और ''*जिलाया गया* ... नये जीवन की सी चाल [चलने के लिए]'' के लिए डुबोये जाना आवश्यक है। बपतिस्मे की कोई भी परिभाषा, जैसे कि छिड़काव या उण्डेलना: पौलुस द्वारा सिखाए गए चिह्न के अनुकूल नहीं, बल्कि मनुष्यों की परम्परा है।

रोमियों 6:17, 18 में पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि ये भाई ''पाप के दास थे तौ भी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।'' आयत 17 में जिस ''उपदेश'' की वह बात कर रहा था, वह यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का सुसमाचार ही तो था। रोमियों ने उसकी मृत्यु में बपतिस्मे के द्वारा गाड़े जाकर नये जीवन की चाल चलने के लिए जी उठने के द्वारा इस शिक्षा के ''सांचे'' (या नमूने) को मान लिया था। वे उस समय ''पाप से छुड़ाए जाकर'' ''धर्म के दास'' हो गए थे।

पाप से छुड़ाए जाने में दो बड़ी समस्याएं हैं: हमारे पाप क्षमा होने आवश्यक हैं और पाप के पुराने स्वभाव पर विजय पानी आवश्यक है। यीशु की मृत्यु में बपतिस्मा लेकर (रोमियों 6:3), पापी व्यक्ति इन दोनों समस्याओं को देखने के लिए यीशु की सामर्थ में भरोसा व्यक्त

करता है। वह अपने पापों को धोने (प्रेरितों 22:16) के लिए यीशु के लहू पर भरोसा रखता है और अपने जीवन से शैतान के बन्धन को तोड़ने तथा पाप से छुटकारे के लिए परमेश्वर की सामर्थ में भरोसा रखता है (रोमियों 6:7)। पौलुस ने लिखा है कि यीशु की मृत्यु के द्वारा ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए'' (रोमियों 6:6)। सुसमाचार का संदेश यह है कि मृत्यु के समय यीशु ने हमारे पुराने पापी स्वभाव को क्रूस पर कीलों से ठोक दिया, ताकि हमारे जीवनों में शैतान का शासन तोड़ा जा सके: ''और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी'' (रोमियों 6:14)। परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के द्वारा हमारे पाप की दोहरी दुविधा का भी हल किया है। उसका लहू हमें हमारे पापों से छुड़ाता है, और उसकी मृत्यु हमें अपने और पाप के बन्धन से छुड़ाती है। बपतिस्मे में हम विश्वास के नये जीवन के लिए जी उठने के लिए यीशु की मृत्यु में प्रवेश करते हैं, जो ''पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित'' था (रोमियों 6:11)।

सारांश

यदि आप प्रभु की मृत्यु में बपतिस्मे के द्वारा उसके साथ गाड़े नहीं गए हैं, तो आवश्यक है कि आप अभी गाड़े जाएं! मन फिराने तथा बपतिस्मे के द्वारा, परमेश्वर आपके पाप क्षमा करेगा और आपको अपने पवित्र आत्मा का दान देगा (प्रेरितों 2:38; 5:32)। बहुत से झूठे शिक्षक यह सिखाते हैं कि पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा आवश्यक नहीं है, लेकिन नया नियम इसके उलट सिखाता है। यदि आप पापों की क्षमा के लिए कभी डुबोए नहीं गए हैं, तो आपके पाप यीशु मसीह के लहू से धोए नहीं गए हैं और आपका प्राण खतरे में है। मेरी प्रार्थना है कि आप इस बात का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करें, प्रार्थना करें और मसीह में बपतिस्मा लेने का निर्णय लें, ताकि आप उसमें एक नई सृष्टि बन सकें। सारी महिमा उसी को मिले!

वचन के द्वारा पवित्र आत्मा के काम

किया गया कार्य	पवित्र आत्मा के द्वारा	परमेश्वर के वचन के द्वारा
1. पाप के विषय में निरुत्तर करता है	यूहन्ना 16:7, 8	प्रेरितों 2:37
2. नया जन्म	यूहन्ना 3:8	1 पतरस 1:23-25
3. जीवन देता है	2 कुरिन्थियों 3:6	याकूब 1:18
4. धोता है	1 कुरिन्थियों 6:11	इफिसियों 5:26
5. पवित्र करता है	2 थिस्सलुनीकियों 2:13	यूहन्ना 17:17
6. मसीही लोगों में वास करता है	रोमियों 8:11	कुलुस्सियों 3:16
7. सच्चाई देता है	1 यूहन्ना 5:7	यूहन्ना 17:17
8. जीवन का स्रोत	रोमियों 15:18	याकूब 1:3
9. उद्धार	तीतुस 3:5	इब्रानियों 1:21